ISSN-2278-8077

दलित अस्मिता

वर्ष-7, अंक-26

जनवरी
मार्च | 2017

सेन्टर फॉर दलित लिटरेचर एंड आर्ट की त्रैमासिक

सेन्टर फॉर दलित लिटरेचर एंड आर्ट की त्रैमासिक

परामर्श मंडल

लक्ष्मण गायकवाड़, अर्जुन डांगले, चौथीराम यादव, अनिल सरकार, हरीश मंगलम्

कुसुम मेघवाल, बामा, वी. कृष्ण, दयानंद बटोही, इंतिजार नईम, शबनम हाशमी, आर. के. नायक

एंडलूरी सुधाकर, सवि सावरकर, वाहरु सोनवणे, सिद्दलिंगय्या

संपादक

विमल थोरात

सहायक संपादक

दिलीप कठेरिया

संपादन सहयोग

सुनील कुमार 'सुमन', प्रमोद कुमार, भीम सिंह, शिवदत्त वावलकर

दलित अस्मिता

सेन्टर फॉर दलित लिटरेचर एंड आर्ट की त्रैमासिक

वर्ष-7, अंक-26

जनवरी | मार्च | 2017

साधारण अंक - 60 रुपये
संयुक्तांक - 100 रुपये

वार्षिक सदस्यता - 350 रुपये
आजीवन सदस्यता - 5000 रुपये

संस्थाएं एवं पुस्तकालय
वार्षिक सदस्यता - 700 रुपये
आजीवन सदस्यता - 8000 रुपये

कृपया अपनी सदस्यता राशि
सेन्टर फॉर दलित लिटरेचर एंड आर्ट, नई दिल्ली के नाम संपादकीय कार्यालय के पते पर
मनीऑर्डर/ ड्राफ्ट/ चेक द्वारा भेजें।

© सर्वाधिकार सुरक्षित

दलित अस्मिता में प्रकाशित रचनाओं के साथ
इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ दलित स्ट्डीज
एवं संपादक की सहमति होना आवश्यक नहीं है।
इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ दलित स्ट्डीज से संबंधित सभी विवादास्पद मामले दिल्ली न्यायालय के अधीन होंगे।
अंक में प्रकाशित सामग्री के पुनर्प्रकाशन के लिए लिखित अनुमति अनिवार्य है।

ISSN-2278-8077

भीतरी रेखांकन - सुनील अभिमान 'अवचार'

दलित अस्मिता के प्रादेशिक प्रतिनिधि

दिल्ली - प्रो. अजमेर सिंह 'काजल', डॉ. रामचंद्र (जे.एन.यू.)
डॉ. हेमलता महीश्वर (जामिया) धर्मवीर यादव 'गगन' (डी.यू.)
उत्तर प्रदेश, **वाराणसी** - प्रो. चौथीराम यादव, डॉ. निरंजन सहाय, रामबचन यादव 'सृजन'
लखनऊ - श्याम कुमार, कृष्णकांत वत्स, **आगरा**- अर्जुन सावेदिया
कमलेश कुमारी रवि, **शाहजहांपुर** - सुरेश चंद्र कठेरिया, संजय राठोर
बरेली - कुलदीप कुमार, राजेश चौधरी, **गोरखपुर** - राजेश बौद्ध
इलाहबाद - मलखान सिंह, **कानपुर** - आशीष कुमार 'दीपांकर'
महाराष्ट्र, **मुम्बई** - लक्ष्मण गायकवाड, सुनील अभिमान 'अवचार'
नागपुर - किरण काशीनाथ, संजय जीवने, **औरंगाबाद** - वीरा राठौर
नंदुरबार - फुलाराव खांडेकर, रामेश्वर नागराले, **पुणे**-शिवदत्त वावलकर
वर्धा - रजनीश अम्बेडकर, प्रफुल्ल मून, **चंद्रपुर** - अशोक पवार
पंजाब - मोहन त्यागी, मदनवीरा, देशराज काली, गुरमीत सिंह,
कल्लर माजरी, जयप्रकाश लीलवान, भगवंत रसुलपुरी, सरुप सियालवी
हरियाणा, हिसार - रजत कल्सन, बजरंग, **करनाल** - आनंद मिश्र
कुरुक्षेत्र - अमित चौहान
झारखंड - निर्मला पुतुल, प्रो. वी.एन. पांडे (रांची विश्वविद्यालय)
जगदीश लोहरा, योगेश कुमार
बिहार - रमाशंकर आर्य, मुसाफिर बैठा, कर्मानंद आर्य
राजस्थान, **उदयपुर**- कुसुम मेघवाल , **जयपुर**- रत्नकुमार सांभरिया
महेन्द्रगढ़- डॉ. अरविंद तेजावत
तेलंगाना - डॉ. भीम सिंह, साईनाथ सोनटक्के
त्रिपुरा - डॉ. जय कौशल
गुजरात- हरीश मंगलम्, दलपत चौहान, डॉ. हरेश परमार
डॉ. गोवर्धन बंजारा, डॉ. धीरजभाई वणकर
कर्नाटक (बेल्लारी) - डॉ. शान्ता नाईक
शिलांग - सरिता गुप्ता, **पोर्ट ब्लेयर** - जया प्रभा
अंतर्राष्ट्रीय प्रतिनिधि, **रोमानिया** - प्रो. वी. कृष्ण

संपादकीय कार्यालय
सेन्टर फॉर दलित लिटरेचर एंड आर्ट
डी-2/1, रोड न.-4, एंड्रयूज गंज, नई दिल्ली-110049
फोन: 011-28037052, 26251808
मोबाईल: 9811807522, 9811135667
ई-मेल: asmita@dalitstudies.org.in
Web Site : www.cdla.in

इस अंक में

संपादकीय 5
विमल थोरात

पाठक संवाद 8
दामोदर मोरे, डॉ. सुनील मानव, दिविक रमेश, डॉ. प्रेरणा उबाके

युग नायिका सावित्रीबाई फुले
विद्रोह की मशाल है सावित्रीबाई फुले की कविताएं - अनिता भारती 12
युग नायिका सावित्रीबाई फुले - रजनी तिलक 22
सावित्रीबाई फुले : व्यक्तित्व के कुछ अनछुए आयाम - डॉ. सूर्यनारायण रणसुभे 28
सावित्रीबाई फुले : भारत की पहली महिला अध्यापिका - एच. एल. दुसाध 36
आधुनिक मराठी कविता की जननी सावित्रीबाई फुले - दामोदर मोरे 39
प्रेम, विमर्श और सामाजिक क्रान्ति की अग्रदूत : सावित्रीबाई फुले - डॉ. कर्मानंद आर्य 48
देश की प्रथम शिक्षिका : सावित्रीबाई फुले - डॉ. पूनम सिंह 54
क्रांतिज्योति सावित्रीबाई फुले - डॉ. महेश दवंगे 61
सावित्रेबाई फुले : क्रान्तिकारी व बहु आयामी व्यक्तित्व - डॉ. हेतल जी. चौहाण 66
वैश्विक बौद्धिक परंपरा का प्रतिनिधित्व करती सावित्रीबाई फुले - अस्मिता राजुरकर 70
स्त्री-शूद्रातिशूद्र की मुक्ति और सावित्रीबाई फुले की कविता - डॉ. संजय रणखांबे 73
नारी शिक्षा एवं नारी मुक्ति की क्रान्तिकारी महानायिका : सावित्रीबाई फुले - बैद्यनाथी राम 79

स्तंभ
दलित प्रतिरोध का रंग संवाद - राजेश कुमार 82

वैचारिकी
बेगमपुरा शहर को नाऊं - निरंजन सहाय 88

साक्षात्कार
हरपाल सिंह 'अरुष' से बातचीत - संदीप कुमार 93

हिन्दी कहानी
सींकिया की गड़िया बीरन - जनार्दन 99

लघु कथा
आखिर, कौन हो तुम? - गौरव जोगी पठानिया 110
क्लीन सर का स्वच्छता अभियान - डॉ. पूरन सिंह 111

मराठी कविताएं 112
सावित्रीबाई फुले, शाम गायकवाड

हिन्दी कविताएं 117
असंगघोष, डॉ. सी.बी. भारती, डॉ. कुसुम वियोगी, रामबचन यादव 'सृजन'
सुशांत सुप्रिय, बाल गंगाधर 'बागी', बागेश कुमार, विद्यासागर शर्मा

पुस्तक परख
अमानवीयताओं के विरुद्ध क्रान्ति का उद्घोष - डॉ. सी.बी. भारती 127
'नगाड़े की तरह बजते शब्द' में आदिवासी स्त्री का संघर्ष और प्रतिरोध - सोनम मौर्या 131

हलचल
चलो नागपुर : मनुवाद, हिन्दुत्व और ब्राह्मणवाद के खिलाफ औरतों की ललकार - दिलीप कठेरिया 138
एक दिवसीय राष्ट्रीय सम्मलेन दलित साहित्य की अवधारणा, संघर्ष व चुनौतियां - हरपाल सिंह भारती 140
दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी अस्मितामूलक साहित्य का सौंदर्यशास्त्र - प्रियंका कुमारी 141

(English Section)

Article
Savitribai Phule: True Teacher and Champion of Women Liberation -Dr. Parmod Kumar 144

Poetry 148
Mushafir Baitha, Dr. M. Bharathi

संपादकीय

युग नायिका क्रांतिज्योति सावित्रीबाई फुले

भारतीय समाज अनेकानेक विघटनकारी धार्मिक रूढ़ियों-परंपराओं के कारण हमेशा एक कमजोर राष्ट्र बना रहा। सदियों तक धर्म के प्रभाव में समाज के हाशिये के वर्गों पर धार्मिक विधि-विधान के नाम पर अनगिनत अन्यायपूर्ण परंपराएं थोपकर सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक सांस्कृतिक अधिकारों को खारिज करके दमन-शोषण का सिलसिला कायम किया। उद्देश्य था कि दबा-कुचला एक गुलाम वर्ग हमेशा वर्चस्ववादी जातियों की सेवा में हाजिर रहें। ज्ञानचक्षु के विकसित होने से यह वर्ग विद्रोह न करे इसके लिए ज्ञान प्राप्ति के अधिकार से ही वंचित कर दिया। धर्म, ईश्वर और प्राप्त जन्म को पूर्व जन्म के फलस्वरूप मानने पर विवश करके हाशिये के जन्म पर ही श्रापित का ठप्पा लगा दिया। यह समाज अपनी मेहनत की गाढ़ी कमाई को पूजा-अर्चना, होम हवन में स्वाह करता रहा और सुविधा भोगी ब्राह्मण भट सुख सुविधा का आकंठ उपभोग करते रहे। परिणामतः देश-समाज निर्माण की निर्णय प्रक्रिया में शूद्रातिशूद्र किसी भी रूप में शमिल नहीं किये गए। धार्मिक वर्चस्व ने एक विशेष जाति के प्रभुत्व के लिए तमाम धार्मिक रूढ़ि, रीतियों और परंपराओं की निर्मिती करके इसका विरोध करने अथवा तोड़े जाने पर प्राणांतक सजायें दी जाती रही। ब्राह्मणों ने अपने इन तर्क शून्य ढकोसलों को ध र्म का जामा पहनाने हेतु सैकड़ों धर्म ग्रंथों की उद्देश्य पूर्ण निर्मिति करके, शूद्र-अतिशूद्रों और स्त्रियों को भय से आतंकित करते रहे। सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक और धार्मिक संरचना पर सनातनियों का वर्चस्व बना रहा। वर्चस्व की भूख से पैदा हुई जड़ता और विवेक शून्यता के परिणाम स्वरुप वर्चस्ववादी प्रवृत्ति इस कदर बेशर्म और कोढ़ी हो चुकी थी कि समाज और देश की अधोगति होते हुए देखना उन्हें विचलित नहीं करती। पेशवाओं ने राजनीतिक शक्ति को धर्म की आड़ में इस्तेमाल किया। अछूतों को ठुनकने के लिए गले में मटकी और पैरों के निशान मिटाने के लिए कमर में झाड़ू बांधे जाने का फरमान जारी किया। जिसका उद्देश्य था कि जब ब्राह्मण वर्ग बाहर निकले तो अछूत का थूक और पैरों के निशान से उन्हें छूत नहीं हो। हिन्दू धर्म ने शिक्षा से शूद्र-अतिशूद्र तथा स्त्रियों को शिक्षा से वंचित करने के लिए धर्म का इस्तेमाल किया। सदियों तक अशिक्षा के अंधकार में डूबा हुआ हाशिये का समुदाय चुपचाप इस अन्याय को सहता रहा।

ब्रिटिश राज आने के बाद भी धार्मिक आतंक से भयाक्रांत शूद्र-अतिशूद्र और स्त्रियां इस प्रकार के जीवन को अपना भाग्य मानने पर मजबूर थे। अंग्रेजों ने अपने साम्राज्य को फैलाने के लिए सरकारी पाठशालायें खोली जिसमें सभी धर्म-जाति के छात्रों का प्रवेश संभव था। लेकिन अछूत और लड़कियों के लिए पाठशालायें खोलने के लिए ब्राह्मण, भटों के विरोध के कारण अंग्रेजों ने चुप रहना मुनासिब समझा। मिशनरी स्कूल में शिक्षित ज्योतिबा फुले ने बड़ी शिद्दत से महसूस किया कि ब्रिटिश राज में भी ब्राह्मणों की संकुचित सनातनी सोच का बोलबाला है और वे शूद्रों के ज्ञानार्जन का विरोध करने में